21.12.2021

रिपोर्ट

भारतीय संस्कृति में नृवंश विवरण का लेखन कार्य (वंशावली लेखन) आदि काल से निरंतर वंशलेखक समाज गौरवमयी दायित्व के रूप में निर्वाह करता आ रहा है। समाज के प्रत्येक वर्ग व वर्ण का वैज्ञानिक पद्धत्तियों का उपयोग करते हुए सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, विधिक तथ्यों का विवरण पोथियों अथवा बहियों में इन्द्राज करना निश्चित रूप से आदि ऋषियों-मनीषियों के प्रखर चिंतन का ही परिणाम है। आज सैकड़ों वर्षों के बाद भी मानव को उसके मूल वर्ण, कुल जाति, उद्भव, आव्रजन प्रव्रजन इत्यादि का बोध यह नृवंश विवरण अर्थात् वंशावलिया करवाती है।
प्रारम्भ में वशावलिया मौखिक रूप से सरक्षित की जाती रही परन्तु लिपि व लेखन के विकास के साथ ही वंशावलियों को भी लिखित रूप दिया जाने लगा जो अपेक्षाकृत अधिक सरल व स्थाई था। मैदानी क्षेत्रों में वंशावलिया एक सशक्त दस्तावेज के रूप में विकसित हुई। भारत के पहाड़ी क्षेत्र यथा सिक्किम, असम, मिजोरम, मेघालय, अरावली क्षेत्र इत्यादि में वंशावली विधा की वाच्य परम्परा विद्यमान है। यहां भी वंशावली की वाच्य परम्परा के स्थान पर लेखन प्रारम्भ करने की आवश्यकता दृष्टिगोचर होने लगी है।

वंशलेखन का कार्य न केवल भारत बल्कि ऐसे देशों में भी अनेक रूपों में मिलता है जो भारतीय संस्कृति के सम्पर्क में रहे हैं। सम्पूर्ण भारत में वंशलेखक समाज निवास करता है व अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे राजस्थान में राव, भाट, जागा, गुजरात में बारोठ, बिहार में पंजीकार कर्नाटक में हेलवा इत्यादि । वंशलेखन की इस पद्धत्ति के अन्तर्गत वंशावली लेखक यजमान के निवास पर जाकर सम्पूर्ण तथ्यों का इन्द्राज अपनी बहियों में परिवारजन, पंच, संरपच या समाज के प्रमुख व प्रभुत्वसम्पन्न व्यक्तियों की साख में करता है। वहीं दूसरी पद्धत्ति में तीर्थ स्थानों पर तीर्थाटन को या मरणोपरांत कर्मकाण्ड हेतु तीर्थ को जाने वाले लोगों का वंश विवरण तीर्थ पुरोहित या पण्डा समाज करता है। इस प्रकार भारत में वंशावली संरक्षण के उक्त दो रूपों के साथ वाच्य परम्परा भी विद्यमान है।

विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
सप्त सिंधु परिसर देहरा
जिला कॉंगड़ा (हि.प्र.) 177101

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Department of History

Central University of Himachal Pradesh

(Under the aegis of IQAC)

invites you for a

A National Workshop on

Genealogy and History Writing in India

अध्यक्ष	विशिष्ट अतिथि	विशिष्ट वक्ता 1	विशिष्ट वक्ता 2
प्रो. एस. पी. बंसल माननीय कुलपति हिमाचल प्रदेश कें. वि. धर्मशाला	प्रो. के. सी. अग्निहोत्री सलाहकार संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार	श्री रामप्रसाद संघ प्रचारक संस्थापक एवं संरक्षक वंशावली संस्थान	डॉ. सुखदेव राव वंशावली लेखक राष्ट्रीय संगठन मंत्री अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान

Date: 21st December 2021

Time: 3:00 PM

Online Platform: Google Meet

Link: https://meet.google.com/dcc-nfbv-vxo

Convenor

Prof. Narayan Singh Rao, Head, Department of History & Dean, School of Social Sciences, CUHP

Co-convenor(s)

Dr. Kanwar Chanderdeep Singh, Associate Professor, Department of History, CUHP
Dr. Rajeev Kumar, Assistant Professor, Department of History, CUHP
Dr. Raghvendra Yadav, Assistant Professor, Department of History, CUHP
Dr. Pravat Ranjan Sethi, Assistant Professor, Department of History, CUHP
Mr. Thuktan Negi, Assistant Professor, Department of History, CUHP

विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
सप्त सिंधु परिसर देहरा
जिला कांगड़ा (हि.प्र.) 177101